Journal of Socio-Educational & Cultural Research
International Journal of Arts & Social Sciences
Peer Reviewed Refereed Journal
Published by Srijan Research Foundation, Varanasi India
Vol.12, N. 27, December 2026,
DOI: https://doi.org/10.68868/14Js15aK34
www.jsecrjournal.in

वृद्धाश्रम में आवासित वृद्ध पुरुषों का सामाजिक जीवन
(अयोध्या नगर निगम में स्थित वृद्धाश्रम पर आधारित एक समाजशास्त्रीय अध्ययन)

डॉ0 प्रतिभा
सहायक आचार्य, समाजशास्त्र विभाग
डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या
ई.मेल:pratibhasingh993555@gmail.com

सारांश -

मानव जीवन अनेक अवस्थाओं से होकर गुजरता है, इसमें वृद्धावस्था जीवन का अंतिम एवं संवेदनशील कालखंड होता है। इस अवस्था में व्यक्ति को शारीरिक, मानसिक, आर्थिक तथा सामाजिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। भारतीय समाज में तीव्र सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन तथा पारिवारिक संरचना में आए बदलाव ने वृद्धों की स्थिति को गहराई से प्रभावित किया है। आज जैसे-जैसे भौतिकवादी और व्यक्तिवादी मूल्य का प्रभाव बढ़ रहा है, वैसे-वैसे वृद्धजन पारिवारिक , उपेक्षा,अकेलेपन और असुरक्षा की भावना का सामना कर रहे हैं। ऐसे परिवेश में वृद्ध आश्रम वृद्धों के लिए वरदान सिद्ध हो रहे हैं।जो वृद्धों के लिए वैकल्पिक व्यवस्था के रूप में उभरे हैं। प्रस्तुत शोध पत्र वृद्ध आश्रम में आवासित वृद्ध पुरुषों के सामाजिक जीवन पर आधारित है। जिसका उद्देश्य वहां रहने वाले वृद्धों की सामाजिक - आर्थिक तथा मनोवैज्ञानिक स्थिति का गहन अध्ययन करना है।

मुख्य शब्द –

औद्योगिकरण, नगरीकरण, पश्चिमीकरण, वैश्वीकरण, उदारीकरण, उपेक्षा, अलगाव, पहचान का संकट, आत्मसम्मान, वैकल्पिक व्यवस्था।

आधुनिक समाज में नगरीकरण तथा औद्योगीकरण के बढ़ते प्रभाव से पारिवारिक संरचना में जो परिवर्तन हो रहे हैं उनसे पारंपरिक संयुक्त परिवार प्रणाली निर्बल होती जा रही है परिणाम स्वरुप वृद्धों विशेष कर वृद्ध पुरुषों के जीवन में अनेक सामाजिक, भावनात्मक, परिवार से अलगाव, उपेक्षा, आर्थिक निर्भरता तथा स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं उन्हें वृद्धाश्रमों की ओर उन्मुख करती है। इस बदलते सामाजिक परिवेश में वृद्धाश्रमों की भूमिका महत्वपूर्ण रूप से उभर कर सामने आई है। वृद्धाश्रम में उन्हें मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु (भोजन, वस्त्र, आवास, स्वास्थ्य) विभिन्न सेवाएं एवं सुरक्षा प्रदान की जाती है, फिर भी वहां रहने वाले वृद्धों का सामाजिक जीवन अनेक प्रकार की चुनौतियों से घिरा होता है। पारिवारिक और सामाजिक सदस्यों से दूरी के कारण उनके सामाजिक संबंधों में कमी, अकेलापन, पहचान का संकट तथा आत्मसम्मान में गिरावट जैसी समस्याएं उत्पन्न होती रहती हैं।

भारतीय समाज में वृद्धाश्रमों के प्रति एक सामाजिक धारणा और कलंक मौजूद है, जिसके कारण वहां रहने वाले वृद्ध पुरुष हीन भावना का अनुभव करते हैं यह स्थिति उनके सामाजिक जीवन को और कठिन बना देती है।

वृद्धाश्रम में आवासित जो वृद्ध वहां रहने वाले अन्य वृद्धों एवं कर्मचारियों के साथ सामाजिक संपर्क बनाने में सफल होते हैं उनका जीवन सकारात्मक होता है।वही जो वृद्ध संपर्क स्थापित करने में असफल होते हैं, उनका जीवन अलगाव और उपेक्षा आदि नकारात्मकता से प्रभावित होता है।

वृद्धाश्रम में रहने वाले वृद्ध नागरिकों के लिए भारत सरकार ने कई योजनाएं चलाई है जिसमें –

- अटल वयो अभ्युदय योजना (AVYAY)
- राष्ट्रीय वयोश्री योजना (RVY)
- इंदिरा गांधी राष्ट्रीय वृद्धावस्था पेंशन योजना (IGNOAPS)
- राष्ट्रीय वृद्ध स्वास्थ्य देखभाल कार्यक्रम (NPHCE)
- आयुष्मान भारत योजना

वर्तमान में भारत सरकार द्वारा वृद्ध नागरिकों के स्वास्थ्य संरक्षण हेतु आयुष्मान भारत योजना (5 लाख तक का निशुल्क स्वास्थ्य सुविधा) संचालित की जा रही है।

उत्तर प्रदेश के वृद्धाश्रमों में रहने वाले वृद्ध नागरिकों के लिए केंद्र सरकार की योजनाओं के साथ-साथ राज्य सरकार की भी सुविधाएं उपलब्ध हैं। स्वास्थ्य एवं अन्य विभिन्न सुविधाओं के फलस्वरुप पुरुषों की औसत आयु जहां वर्ष 2001 में 62.10 वर्ष थी वहीं वर्ष 2011 में बढ़कर 66.09 वर्ष हो गई।

अध्ययन का उद्देश्य एवं महत्व-

उपर्युक्त संदर्भ में प्रस्तुत शोध का उद्देश्य वृद्धाश्रम में आवासित वृद्ध पुरुषों के सामाजिक जीवन का समग्र अध्ययन करना है। यह शोध वृद्ध पुरुषों के सामाजिक संबंधों, दैनिक जीवन की गतिविधियों, सामाजिक सहभागिता आदि विभिन्न कारकों का विश्लेषण करेगा। साथ ही यह अध्ययन उन समस्याओं एवं चुनौतियां को पहचानने का प्रयास करेगा जिसका सामना वे आश्रम में रहते हुए आए दिन करते हैं।

परिवर्तनशील परिप्रेक्ष्य में सूचना प्रौद्योगिकी जनसंचार एवं संवैधानिक व्यवस्था तेजी से बदल रही है वर्तमान समय में वृद्धों के व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक क्षेत्र से विभिन्न नई-नई चुनौतियां उत्पन्न हो रही हैं। संक्रमण की इस स्थिति में वृद्धों के सम्मुख उपर्युक्त सभी क्षेत्रों से समायोजन की समस्या उत्पन्न हो गई है। सामाजिक व्यवस्था में उनके लिए संतुलन स्थापित करने का मार्ग प्रशस्त करेगा । यहीं इस अध्ययन का मौलिक उद्देश्य है। बदलते सामाजिक परिवेश में समायोजन के लिए यह अध्ययन उपयोगी होगा। यह अध्ययन समाजशास्त्रीय दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि वर्तमान समय में वृद्धावस्था से संबंधित समस्याएं तेजी से बढ़ रही हैं। बदलती सामाजिक संरचना के कारण अनेक वृद्ध पुरुष वृद्धाश्रम में जीवन व्यतीत करने के लिए विवश हो रहे हैं। यह अध्ययन वृद्ध पुरुषों की वास्तविक सामाजिक परिस्थितियों, समस्याओं एवं आवश्यकताओं को समझने में सहायक होगा।

पूर्व साहित्य सर्वेक्षण-

भारत में संयुक्त परिवार व्यवस्था में विघटन एवं बदलते सामाजिक परिवेश में नगरीकरण, औद्योगीकरण तथा बदलती सामाजिक परिस्थितियों के कारण वृद्धजनों की पारिवारिक एवं सामाजिक स्थिति में भी परिवर्तन आया है। इसी संदर्भ में विभिन्न विद्वानों एवं संस्थाओं द्वारा वृद्धजनों की स्थिति पर अध्ययन किए गए हैं।

- **आलम मुनीर** (2006) ने अपनी पुस्तक "भारत में वृद्धावस्था: सामाजिक, आर्थिक एवं स्वास्थ्य आयाम" में वृद्धों के सामाजिक, आर्थिक एवं उनके स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं का व्यवस्थित अध्ययन प्रस्तुत किया है।
- **ए. के. भट्ट (2001)** की पुस्तक "भारत में वृद्धावस्था: चुनौतियां और अवसर" में भी वृद्धों की समस्याओं का विवेचन मिलता है।
- **बंसल एवं बंसल** ने भी अध्ययन में पाया कि वृद्धाश्रम में रहने वाले अधिकांश वृद्ध पारिवारिक दुर्व्यवहार के कारण वहां रहने के लिए विवश हैं।
- **United Nations (2002**) द्वारा प्रस्तुत "Madrid International Plan of Action on Ageing " में सक्रिय वृद्धावस्था, सामाजिक समायोजन, गरिमापूर्ण जीवन तथा वृद्ध अनुकूल नीतियों पर बल दिया गया है। इस दस्तावेज ने वृद्धों के अधिकारों और सामाजिक सुरक्षा को वैश्विक स्तर पर महत्वपूर्ण विषय के रूप में स्थापित किया।
- **Help Age India** द्वारा विभिन्न वर्षों में प्रकाशित अध्ययनों में यह उल्लेख किया गया है कि अनेक वृद्ध भावनात्मक उपेक्षा, सामाजिक अलगाव तथा सम्मान की कमी का अनुभव करते हैं। इन अध्ययनों में यह भी पाया गया कि परिवार से मिलने वाला सहयोग वृद्धों के मानसिक एवं सामाजिक स्वास्थ्य का महत्वपूर्ण आधार है।
- वृद्धों की सामाजिक स्थिति के विश्लेषण के क्रम में वृद्धों के नकारात्मक जीवन से संबंधित अपने विवरण प्राप्त होते हैं। (दैनिक जागरण दिनांक- 15-01-2024, पेज नंबर 07)
- **गोयल एवं प्रतिभा** ने "अनुभूति एक प्रयास" अंक 02,2024 में वृद्धों के वैयक्तिक अध्ययन के अंतर्गत अयोध्या में स्थित वृद्धाश्रम के वृद्धों का वृहत एवं व्यवस्थित अध्ययन प्रस्तुत किया।
- **पांडियन एवं सहयोगी** ने 2024 में दक्षिण चेन्नई के वृद्धाश्रमों में 330 वृद्धों का अध्ययन किया, अध्ययन ने नियमित पारिवारिक संपर्क और सामाजिक सहभागिता बढ़ाने की आवश्यकता पर बोल दिया।
- **आरा (S.Ara)** ने भारत में वृद्धाश्रमों और उनमें रहने वाले वृद्धो से संबंधित पूर्व अध्ययनों की समीक्षा की, अध्ययन में पाया की बदलती सामाजिक संरचना, पारिवारिक एवं नातेदारी संबंधों के कमजोर होने के कारण वृद्धो में अलगाव और आर्थिक निर्भरता की स्थिति उत्पन्न हो रही है।
- भारत की जनगणना में वृद्ध जनसंख्या से संबंधित आंकड़ों के माध्यम से देश में वृद्धजनों की जनसांख्यिकीय स्थिति को समझने में सहायता मिलती है। आयु संरचना में होने वाले परिवर्तनों के साथ वृद्धजनों की संख्या में वृद्धि ने उनके स्वास्थ्य, आर्थिक सुरक्षा, पारिवारिक सहयोग, आवास तथा सामाजिक सुरक्षा जैसे विषयों को महत्वपूर्ण बना दिया है।

उपर्युक्त अध्ययनों के आधार पर कहा जा सकता है कि वृद्ध आश्रम में रहने वाले वृद्धो की सामाजिक स्थिति बहुआयामी है। वृद्धाश्रम आने के पीछे पारिवारिक सहयोग का अभाव, अकेलापन, आर्थिक समस्याएं, स्वास्थ्य समस्याएं तथा परिवार से अलगाव जैसे कारण महत्वपूर्ण हैं।

उपकल्पना-

1. वृद्धाश्रम में आवासित वृद्धों की आर्थिक स्थिति निम्न होती है।
2. वृद्धाश्रम में आवासित वृद्ध पारिवारिक तनावपूर्ण कारणों से मूल स्थान छोड़ने के लिए विवश होते हैं।
3. वृद्धाश्रम में आवासित अधिकांश वृद्ध पुरुष पारिवारिक उपेक्षा एवं सामाजिक अलगाव का अनुभव करते हैं ।
4. वृद्धों में प्राय: राज्य सरकार द्वारा बनाए गए अधिनियमों के प्रति चेतना का अभाव होता है। इस कारण विभिन्न सरकारी योजनाओं के लाभ एवं सुविधाओं से वंचित रहते हैं।
5. वृद्धाश्रम में वृद्धों को अनेक वैयक्तिक, आवासीय, खान-पान, स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं से प्रत्यक्षीकृत होना पड़ता है।

समग्र प्रतिदर्श –

प्रस्तुत शोध पत्र उत्तर प्रदेश के अयोध्या नगर में स्थित वृद्धाश्रम पर आधारित है। इसमें कुल 120 वृद्धों में से 54 वृद्ध पुरुष हैं । समग्र में से अध्ययन हेतु 50 वृद्धों का चयन उद्देश्यपूर्ण निदर्शन विधि से किया गया है। जिनसे साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से आवश्यक जानकारी प्राप्त की गई है। आवश्यकता अनुसार अवलोकन प्रविधि एवं वैयक्तिक अध्ययन पद्धति का भी उपयोग किया गया है।

संपूर्ण अध्ययन की पद्धति सर्वेक्षणात्मक एवं वर्णनात्मक है।

तथ्य संकलन की प्रविधि-

प्रस्तुत शोध पत्र में तथ्यों के संकलन हेतु प्राथमिक एवं द्वितीय दोनों प्रकार की प्रविधियोंका उपयोग किया गया है।

प्राथमिक स्रोत-

तथ्यों के संकलन के लिए वृद्धाश्रम में आवासित वृद्ध पुरुषों से प्रत्यक्ष संपर्क करके उनसे साक्षात्कार, प्रश्नावली एवं अवलोकन विधि से तथ्यों को एकत्रित किया गया है।

द्वितीयक स्रोत-

इसके अंतर्गत विभिन्न पुस्तकों, शोध-पत्रों, सरकारी रिपोर्टों, जनगणना आंकड़ों तथा पत्र-पत्रिकाओं आदि का उपयोग कर वृद्धावस्था, वृद्धाश्रम एवं सामाजिक जीवन से संबंधित आवश्यक जानकारी प्राप्त की गई है।

विश्लेषणात्मक प्रविधि –

प्राथमिक स्रोतों से प्राप्त तथ्यों एवं सूचनाओं को सारणीबद्ध करके सांख्यिकीय पद्धति से उनका विश्लेषण किया गया है। तथ्यों को विभिन्न वर्गों में वर्गीकृत करके आवृत्ति एवं प्रतिशत के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है। निष्कर्ष का आधार अधिक प्रतिशत को माना गया है। अध्ययन के अंतर्गत प्राप्त तथ्यों को निम्नांकित सारणी में वर्गीकृत किया गया है।

तथ्यों का वर्गीकरण –

सारणी संख्या- 1 : उत्तरदाताओं की आयु -

आयु	आवृत्ति	प्रतिशत
60-70 वर्ष	16	32.00
70-80 वर्ष	22	44.00
80 वर्ष से अधिक	12	24.00

योग =	**50**	**100.00**

सारणी संख्या- 2 : उत्तरदाताओं की शिक्षा -

शिक्षा	**आवृत्ति**	**प्रतिशत**
शिक्षित	35	70.00
अशिक्षित	15	30.00
योग =	**50**	**100.00**

सारणी संख्या-3 : उत्तरदाताओं की वैवाहिक स्थिति-

विवाह की आयु	**आवृत्ति**	**प्रतिशत**
विवाहित	33	66.00
अविवाहित	06	12.00
विधुर	07	14.00
तलाकशुदा	04	08.00
योग=	**50**	**100.00**

सारणी संख्या- 4 : उत्तरदाताओं के विवाह की आयु -

विवाह की आयु	**आवृत्ति**	**प्रतिशत**
10-15 वर्ष में	12	24.00
15-20 वर्ष में	29	58.00
20 वर्ष से अधिक	09	18.00
योग=	**50**	**100.00**

सारणी संख्या- 5 : वृद्धाश्रम में उत्तरदाताओं के निवास की अवधि-

निवास की अवधि	**आवृत्ति**	**प्रतिशत**
0-2 वर्ष	35	70.00
2-4 वर्ष	05	10.00
4-6 वर्ष	07	14.00
06 वर्ष से अधिक	03	06.00
योग=	**50**	**100.00**

सारणी संख्या- 6 : पारिवारिक सदस्यों द्वारा सम्मान पूर्वक घर ले जाने के संदर्भ में उत्तरदाताओं का विचार-

उत्तरदाताओं के विचार	आवृत्ति	प्रतिशत
हां	18	36.00
नहीं	32	64.00
योग=	**50**	**100.00**

सारणी संख्या- 7 : आश्रम आने से पूर्व व्यवसाय के संबंध में उत्तरदाताओं के दृष्टिकोण-

व्यवसाय करते थे	आवृत्ति	प्रतिशत
हां	37	74.00
नहीं	13	26.00
योग=	**50**	**100.00**

सारणी संख्या- 8 : चल- अचल संपत्ति के संबंध में उत्तरदाताओं का दृष्टिकोण-

संपत्ति का विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
हां	38	76.00
नहीं	12	24.00
योग=	**50**	**100.00**

सारणी संख्या- 9 : चिकित्सा पर व्यय के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं का दृष्टिकोण-

चिकित्सा पर व्यय का विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
स्वयं	14	28.00
पारिवारिक सदस्य	03	06.00
वृद्धाश्रम	24	58.00
अन्य	04	08.00
योग=	**50**	**100.00**

सारणी संख्या- 10 : वृद्धाश्रम में सुविधाओं के प्रति उत्तरदाताओं का दृष्टिकोण-

सुविधाओं का विवरण	हां	नहीं	कभी-कभी	योग
आवास में मिलने वाली सुविधा	28 (56.00)	02 (04.00)	20 (40.00)	**50 (100.00)**
वस्त्र संबंधी सुविधा	06 (12.00)	02 (04.00)	42 (84.00)	**50 (100.00)**

स्वास्थ्य संबंधी सुविधा	28 (56.00)	08 (16.00)	14 (28.00)	**50 (100.00)**
भोजन	50 (100.00)	00 (00.00)	00 (00.00)	**50 (100.00)**
भ्रमण संबंधी सुविधा	36 (72.00)	10 (20.00)	04 (08.00)	**50 (100.00)**
घर आने-जाने की सुविधा	27 (54.00)	14 (28.00)	09 (18.00)	**50 (100.00)**
पारिवारिक सदस्यों से मिलने की सुविधा	34 (68.00)	07 (14.00)	09 (18.00)	**50 (100.00)**

सारणी संख्या- 11 : सरकारी एवं कार्यालयीन व्यवहार के प्रति उत्तरदाताओं का विचार-

व्यवहार का स्वरूप	**अच्छा**	**सामान्य**	**खराब**	**योग**
दैनिक व्यवहार (आवश्यकता मूलक)	07 (14.00)	33 (66.00)	10 (20.00)	**50 (100.00)**
सामाजिक संपर्क के प्रति व्यवहार	05 (10.00)	36 (72.00)	09 (18.00)	**50 (100.00)**
स्वास्थ्य संबंधी व्यवहार	06 (12.00)	30 (60.00)	14 (28.00)	**50 (100.00)**
भावनात्मक व्यवहार	10 (20.00)	24 (48.00)	16 (32.00)	**50 (100.00)**

सारणी संख्या- 12 : पारिवारिक समस्याओं के प्रति उत्तरदाताओं के दृष्टिकोण-

विभिन्न समस्याएं	**हां**	**नहीं**	**योग**
स्वास्थ्य समस्या	37 (74.00)	13 (26.00)	**50 (100.00)**
आर्थिक समस्या	41 (82.00)	09 (18.00)	**50 (100.00)**
परिवार से अलगाव की समस्या	38 (76.00)	12 (24.00)	**50 (100.00)**
उपेक्षात्मक व्यवहार की समस्या	42 (84.00)	08 (16.00)	**50 (100.00)**
दुर्व्यवहार (मारपीट) एवं पारिवारिक विवाद की समस्या	38 (76.00)	12 (24.00)	**50 (100.00)**
उचित सम्मान न मिलना	48 (96.00)	02 (04.00)	**50 (100.00)**

सारणी संख्या- 13 : वृद्धों के लिए सरकार द्वारा बनाए गए अधिनियमों के प्रति उत्तरदाताओं का दृष्टिकोण-

जानकारी है	आवृत्ति	प्रतिशत
हां	16	32.00
नहीं	34	68.00
योग=	**50**	**(100.00)**

सारणी का विश्लेषण-

- सारणी संख्या- 01 से स्पष्ट होता है कि अध्ययन के अंतर्गत चयनित उत्तरदाताओं में से 70-80 वर्षायु वर्ग का प्रतिनिधित्व सर्वाधिक (44.00 प्रतिशत) है। 32.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं की आयु 60-70 वर्ष है, जबकि 80 वर्ष से अधिक आयु के उत्तरदाताओं का प्रतिशत 24.00 है
- सारणी संख्या- 02 के आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं में शिक्षित व्यक्तियों का अनुपात सर्वाधिक (70.00 प्रतिशत) है, वहीं 30.00 प्रतिशत उत्तरदाता शिक्षा से वंचित पाए गए।
- वैवाहिक स्थिति के आधार पर उत्तरदाताओं का वर्गीकरण सारणी संख्या- 03 में प्रदर्शित है, जिसमें अधिकांश (66.00 प्रतिशत) उत्तरदाता विवाहित हैं, 12.00 प्रतिशत उत्तरदाता अविवाहित हैं, 14.00 प्रतिशत विधुर हैं। जबकि 08.00 प्रतिशत उत्तरदाता तलाकशुदा जीवन व्यतीत कर रहे हैं।
- अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं के विवाह की आयु से संबंधित प्राप्त तथ्यों को सारणी संख्या- 04 में दर्शाया गया है। जिसमें अधिकांश (58.00 प्रतिशत) उत्तरदाताओं का विवाह 15-20 वर्ष की आयु में हो गया था। 24.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कहना है कि विवाह के समय उनकी आयु 10-15 वर्ष थी, जबकि 18.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं के विवाह की आयु 20 वर्ष से अधिक था।
- उत्तरदाता वृद्धों से उनके वृद्धाश्रम में निवास की अवधि से संबंधित प्रश्न किया गया। प्राप्त उत्तरों को सारणी संख्या- 05 में संकलित किया गया है। विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि अधिकांश (70.00 प्रतिशत) उत्तरदाता 02 वर्ष से वृद्धाश्रम में निवास कर रहे हैं। 14.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं का वृद्धाश्रम में निवास की अवधि 4-6 वर्ष है, जबकि 6.00 प्रतिशत उत्तरदाता 6 वर्ष से अधिक अवधि से वृद्धाश्रम में निवास कर रहे हैं।
- पारिवारिक जनों द्वारा वृद्ध जनों को सम्मान पूर्वक पुनः घर ले जाने के संबंध में प्रश्न पूछा गया। प्राप्त उत्तरों को सारणी संख्या- 06 में संकलित किया गया है। सारणी के विश्लेषण से स्पष्ट है कि सर्वाधिक (64.00 प्रतिशत) उत्तरदाता पुनः घर वापस नहीं जाना चाहते जबकि 36.00 प्रतिशत उत्तरदाता अपने पारिवारिक सदस्यों के साथ वापस घर जाना चाहते हैं।
- उत्तरदाताओं के पूर्व व्यवसाय से संबंधित प्रश्न के उत्तर में पाया गया कि अधिकांश (74.00 प्रतिशत) उत्तरदाता वृद्धाश्रम आने से पूर्व किसी न किसी व्यवसाय (जैसे- सरकारी सेवा, निजी सेवा, कृषि व्यवसाय, मजदूरी, गृह कार्य तथा अन्य व्यवसाय) में संलग्न थे, जो सारणी संख्या-07 में प्रदर्शित है।जबकि 26.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास पूर्व में कोई व्यवसाय नहीं था।

- उत्तरदाताओं से उनकी चल-अचल संपत्ति से संबंधित जानकारी प्राप्त की गई, प्राप्त जानकारी को सारणी संख्या- 08 में दर्शाया गया है। सारणी के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि वृद्धाश्रम आने से पूर्व सर्वाधिक (76.00 प्रतिशत)उत्तरदाताओं के पास चल-अचल संपत्ति थी, जबकि 24.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास किसी प्रकार की कोई संपत्ति नहीं थी।
- सारणी संख्या- 09 में वर्णित "चिकित्सा पर व्यय से संबंधित प्रश्नों के विश्लेषण में पाया गया कि उत्तरदाताओं की स्वास्थ्य सेवाओं के प्रति अलग-अलग धारणा है, अधिकांश (58.00 प्रतिशत) उत्तरदाताओं के बीमार होने पर उनके चिकित्सा का व्यय वृद्धाश्रम करता है, 28.00 प्रतिशत उत्तरदाता अपने चिकित्सा का खर्च स्वयं उठाते हैं, 6.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं की चिकित्सा का व्यय उनके पारिवारिक सदस्य उठाते हैं, जबकि 8.00 उत्तरदाताओं के चिकित्सा का व्यय अन्य माध्यमों से होता है।
- वृद्धाश्रम में उपलब्ध सुविधाओं के प्रति उत्तरदाताओं के विचारों को सारणी संख्या- 10 में दर्शाया गया है, अध्ययन से यह स्पष्ट है कि अधिकांश (56.00 प्रतिशत) उत्तरदाताओं को वृद्धाश्रम में आवासीय सुविधाओं में बेड, मच्छरदानी, बिस्तर, कंबल आदि मिलता है, 04.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं को यह सुविधा नहीं मिल पाती है जबकि 40.00 करदाताओं के यह सुविधा कभी-कभी मिलती है।

  सारणी के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि अध्ययन में सम्मिलित अधिकांश (84.00प्रतिशत) उत्तरदाताओं को कभी-कभी ही वस्त्र मिलता है, 12.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं को यह सुविधा मिलती है। जबकि 24.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं को यह सुविधा आश्रम की तरफ से नहीं मिल पाता।

  सारणी में स्वास्थ्य संबंधी सुविधाओं के संदर्भ में उत्तरदाताओं के विचारों का अध्ययन करने पर उन्हें 'हाँ', 'नहीं' तथा 'कभी-कभी' तीन श्रेणियों में विभाजित किया गया है। इससे स्पष्ट होता है कि वृद्ध आश्रम में स्वास्थ्य सुविधाओं की उपलब्धता सभी उत्तरदाताओं के लिए समान नहीं है। अधिकांश (56.00 प्रतिशत) उत्तरदाताओं को स्वास्थ्य संबंधी सुविधाएँ नियमित रूप से प्राप्त होती हैं, जबकि 28.00 प्रतिशत को ये सुविधाएँ कभी-कभी ही उपलब्ध होती हैं, तथा 16.00 प्रतिशत उत्तरदाता इन सुविधाओं से वंचित हैं।

  भोजन की सुविधा सभी (100.00 प्रतिशत) उत्तरदाताओं को समान रूप से मिलती है।

  भ्रमण संबंधी सुविधा के संदर्भ में उत्तरदाताओं के विचारों का विश्लेषण करने पर यह स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक (72.00प्रतिशत) उत्तरदाताओं को नियमित रूप से भ्रमण की सुविधा मिलती है, जबकि 20.00 प्रतिशत को यह सुविधा नहीं प्राप्त होती है तथा 08.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं को भ्रमण की सुविधा कभी-कभी ही मिल पाती है।

  सर्वाधिक 54.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं को घर आने- जाने की सुविधा भी मिलती है। जबकि 28.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं को घर जाने-आने की सुविधा प्राप्त नहीं है। 18.00 प्रतिशत उत्तरदाता कभी-कभी घर जाते-जाते हैं।

  पारिवारिक सदस्यों से मिलने की सुविधाओं के आधार पर प्राप्त आंकड़ों से स्पष्ट है कि अधिकांश 68.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं को उनके पारिवारिक सदस्यों से मिलने की सुविधा मिलती है, जबकि 14.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं को उनके पारिवारिक सदस्यों से मिलने की सुविधा प्राप्त नहीं है तथा 18.00 उत्तरदाता कभी-कभी अपने पारिवारिक जनों से मिल लेते हैं।
- सरकारी एवं कार्यालयीन व्यवहार के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं के विचारों से प्राप्त तथ्यों से स्पष्ट है कि उत्तरदाताओं के प्रति सरकारी एवं कार्यालयीन कर्मचारियों के व्यवहार में भिन्नता पाई गई जो सारणी संख्या- 11 में वर्णित है। अध्ययन में सम्मिलित

अधिकांश (66.00 प्रतिशत) उत्तरदाताओं का मानना है कि उनके साथ सामान्य दैनिक व्यवहार किया जाता है, 14.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं की अभिव्यक्ति है कि उनके साथ दैनिक व्यवहार अच्छा किया जाता है, जबकि 20.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने अभिव्यक्त किया है कि उनके साथ दैनिक व्यवहार ठीक नहीं होता।

सामाजिक संपर्क के प्रति व्यवहार के संदर्भ में उत्तरदाताओं का विचार है कि अधिकांश (72.00प्रतिशत) लोगों का उनके साथ सामाजिक संपर्क सामान्य है, 10.00 प्रतिशत उत्तरदाता कार्यालय एवं सहयोगियों से अच्छा सामाजिक संपर्क स्थापित कर लिए हैं, जबकि 18.00 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे हैं जो समाज से संपर्क बनाने में असफल रहे है।

स्वास्थ्य संबंधी व्यवहार के प्रति उत्तरदाताओं के विचारों को जानने का प्रयास किया गया, अध्ययन में पाया गया कि अधिकांश (60.00 प्रतिशत) उत्तरदाताओं के साथ स्वास्थ्य संबंधी समस्या आने पर कार्यालय द्वारा सामान्य व्यवहार किया जाता है 12.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अस्वस्थ होने पर उनका पूरा ध्यान रखा जाता है, जबकि 28.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने नकारात्मक व्यवहार का वर्णन किया है।

विश्लेषण से स्पष्ट है कि उत्तरदाताओं के प्रति परिवार, समाज एवं आश्रम से जुड़े व्यक्तियों के भावनात्मक व्यवहार में भिन्नता पाई गई है। अधिकांश (48.00 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने भावनात्मक व्यवहार को सामान्य बताया, जबकि 32.00 प्रतिशत ने इसे खराब तथा 20.00 प्रतिशत ने अच्छा बताया।

- उत्तरदाता वृद्धों से उनके परिवार से संबंधित विभिन्न समस्याओं के विषय में प्रश्न किया गया। प्राप्त उत्तरों को सारणी संख्या-12 में संकलित किया गया। सारणी के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि अध्ययन में सम्मिलित 74.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं को स्वास्थ्य संबंधी कोई न कोई समस्या रहती है, 82.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं को आर्थिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है, 76.00 प्रतिशत उत्तरदाता परिवार से अलगाव की समस्या से पीड़ित है, 84.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं के साथ उपेक्षात्मक व्यवहार की समस्या है, 76.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं को पारिवारिक विवाद एवं दुर्व्यवहार की समस्या झेलनी पड़ती है। जबकि 96.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि परिवार में उनका उचित सम्मान नहीं है।
- सारणी संख्या- 13 से स्पष्ट होता है कि अध्ययन में सम्मिलित अधिकांश (68.00 प्रतिशत) उत्तरदाता भारत सरकार द्वारा वृद्धों के कल्याण हेतु बनाए गए अधिनियमों के प्रति जागरूक नहीं है, जबकि 32.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं में अधिनियमों के प्रति चेतना विद्यमान है।

निष्कर्ष –

प्रस्तुत अध्ययन में एक उच्च स्तरीय साक्षात्कार अनुसूची को संरचित करके तथ्यों का संकलन किया गया है। तथ्यों में वैधता एवं विश्वसनीयता लाने के लिए जहां तक संभव हो सका है अनौपचारिक साक्षात्कारों एवं अवलोकन प्रविधियों के माध्यम से भी तथ्यों का संकलन किया गया है। संपूर्ण तथ्य व्यक्तिगत साक्षात्कार प्रणाली द्वारा संकलित किया गया है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में उत्तरदाताओं की आयु, शिक्षा, वैवाहिक स्थिति, विवाह की उम्र, वृद्धाश्रम में उनके निवास की अवधि, उनका व्यावसायिक दृष्टिकोण, स्वास्थ्य समस्याएं, चिकित्सा व्यवस्था, वृद्धाश्रम में विभिन्न सुविधाएं, उनके साथ सरकारी एवं कार्यालयीन व्यवहार एवं विभिन्न समस्याओं के प्रति वृद्धों के दृष्टिकोण आदि को सम्मिलित किया गया है-

- आयु स्तर के आधार पर वृद्धाश्रम वासियों का वितरण करने से ज्ञात होता है कि अधिकांश प्रदर्शित उत्तरदाता 70 से 80 वर्षायु के मध्य में हैं।
- संकलित तथ्यों के विवरण से स्पष्ट है कि सामान्यतः शिक्षित वृद्धों की संख्या सर्वाधिक है जो इस तथ्य की ओर संकेत करता है कि शिक्षित वर्ग में भी विभिन्न समस्याएं होती हैं।
- वैवाहिक स्थिति का अध्ययन करने से स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक 66.00 प्रतिशत उत्तरदाता विवाहित हैं, तथा उनका विवाह 15 से 20 वर्ष की आयु में ही हो गया था। अधिकांश विवाहित महिलाएं एवं पुरुष पारिवारिक उपेक्षा एवं प्रताड़ना से प्रभावित हैं।
- 02 वर्ष से वृद्धाश्रम में आवासित वृद्धों की संख्या सर्वाधिक है।
- सर्वाधिक 64.00 प्रतिशत उत्तरदाता अपने परिवार में वापस नहीं जाना चाहते।
- व्यावसायिक आधार पर उत्तरदाताओं का वितरण किया गया तो पाया गया कि अधिकांश (74.00 प्रतिशत)उत्तरदाता किसी न किसी सरकारी एवं गैर सरकारी नौकरी के साथ ही कोई न कोई व्यवसाय से जुड़े थे, कुछ उत्तरदाता सेवानिवृत कर्मचारी भी हैं।
- सर्वाधिक (76.00 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया है कि अभी भी उनके पास चल - अचल संपत्ति है, इसके बावजूद भी वह आश्रम में रहने के लिए विवश हैं, क्योंकि उन्हें इसका लाभ नहीं मिल पाता है।
- उत्तरदाताओं में स्वास्थ्य सेवाओं के प्रति अलग-अलग धारणा पाई गई। कुछ उत्तरदाता उपलब्ध चिकित्सा सुविधाओं से संतुष्ट हैं, जबकि कुछ ने बेहतर एवं नियमित चिकित्सा सेवाओं की आवश्यकता व्यक्त की।
- आवासीय सुविधाओं के अंतर्गत अधिकांश उत्तरदाताओं को आश्रम की तरफ से बेड, बिस्तर, कंबल, मच्छरदानी आदि की सुविधा प्राप्त है। ज्यादातर उत्तरदाताओं को वस्त्र की सुविधा भी मिलता है। आश्रम में आवासित समस्त वृद्धों को भोजन की सुविधा उपलब्ध है।आश्रम में निवासरत वृद्धजनों को भ्रमण की सुविधा समान रूप से प्राप्त नहीं होती है। फिर भी अधिकांश उत्तरदाताओं को नियमित रूप से भ्रमण की सुविधा मिलती है। साथ ही अधिकांश वृद्धों को घर आने - जाने तथा घर से आने वाले लोगों से मिलने की अनुमति भी दी जाती है।
- सर्वाधिक उत्तरदाताओं ने सरकारी एवं कार्यालयीन गतिविधियों में सामान्य व्यवहार का अनुभव किया। वृद्धजनों के प्रति संवेदनशील, सम्मानजनक एवं सहयोगात्मक व्यवहार सुनिश्चित करने के लिए सरकारी एवं कार्यालयीन स्तर पर अधिक जागरूकता और प्रभावी व्यवस्था की आवश्यकता है।

- अध्ययन से निष्कर्षतः ज्ञात होता है कि वृद्धाश्रम में निवासरत उत्तरदाताओं के जीवन में पारिवारिक समस्याएँ उनके सामाजिक एवं भावनात्मक जीवन को प्रभावित करती हैं। पारिवारिक सहयोग, सम्मान, संवाद तथा अपनत्व की कमी वृद्धजनों के लिए प्रमुख चिंताओं में दिखाई देती है। अतः वृद्धजनों के प्रति परिवार के सदस्यों द्वारा संवेदनशीलता, सम्मान एवं सहयोग की भावना बनाए रखना आवश्यक है, ताकि वे सुरक्षित एवं सम्मानजनक जीवन व्यतीत कर सकें।
- वृद्धों के लिए बनाए गए सरकारी नियमों एवं प्रावधानों के प्रति उत्तरदाताओं में जागरूकता का अभाव पाया गया। स्पष्ट है कि वृद्धजनों के लिए बनाई गई सरकारी नीतियों एवं सुविधाओं की जानकारी को अधिक प्रभावी ढंग से उन तक पहुँचाने की आवश्यकता है।
- वृद्धाश्रम में निवासरत वृद्धजनों के मानसिक तनाव एवं संवेगात्मक भाव उनके पारिवारिक, सामाजिक तथा व्यक्तिगत परिस्थितियों से प्रभावित होते हैं। कुछ उत्तरदाताओं में अकेलेपन, उपेक्षा तथा पारिवारिक दूरी के कारण मानसिक तनाव एवं भावनात्मक असुरक्षा देखने को मिलती है, जबकि अन्य उत्तरदाता आश्रम के वातावरण एवं उपलब्ध सहयोग के कारण अपेक्षाकृत सहज अनुभव करते हैं। अतः वृद्धजनों के मानसिक एवं संवेगात्मक कल्याण के लिए पारिवारिक सहयोग, सामाजिक सहभागिता तथा भावनात्मक सहारे की आवश्यकता है।

  एक ओर जहां कुछ संताने जिम्मेदारियों से बचकर अपनी सुख - सुविधाओं में लिप्त हैं, वहीं दूसरी ओर वृद्धाश्रम जैसी संस्थाएं अपने दायित्वों का पूरी निष्ठा से पालन कर रहीं हैं, वे न केवल अपने वृद्धों को एक सुरक्षित और सम्मानजनक जीवन जीने का अवसर दे रही हैं, बल्कि समाज को यह संदेश भी दे रहीं हैं कि अभी भी ऐसे लोग हैं जो बुजुर्गों की देखभाल और सम्मान को अपना कर्तव्य मानते हैं। इन वृद्धाश्रम में वृद्धों को न केवल भोजन, आवास और चिकित्सा सुविधा प्रदान की जाती है बल्कि उनके मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य का भी ध्यान रखा जाता है। यहां नियमित रूप से भजन, कीर्तन, ध्यान और अन्य धार्मिक, सांस्कृतिक गतिविधियां आयोजित की जाती हैं, जिससे बुजुर्गों को मानसिक शांति और संतोष प्राप्त होता है।

संदर्भ सूची -

- दांडेकर, कुमुदिनी (1996). "The Elderly in India " New Delhi: SAGE Publications.
- भट्ट, भारत एवं ध्रुव राजन (2001). भारत में वृद्धावस्था: चुनौतियाँ एवं अवसर. नई दिल्ली ।
- शुक्ला, मीना एवं गुप्ता, अनीता (2009). "वृद्धाश्रम में स्थित वृद्धों की सामाजिक स्थिति: चिंतन परंपराएँ" जनवरी–जून 2009.
- आलम मुनीर (2006), "भारत में वृद्धावस्था: सामाजिक, आर्थिक एवं स्वास्थ्य आयाम अकादमिक फाउंडेशन।
- गोयल प्रतिभा (2023), " अनुभूति एक प्रयास" डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय अयोध्या।
- गोयल एवं डॉ. प्रतिभा (2024), "अनुभूति एक प्रयास" अंक 02 डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय अयोध्या।
- शुक्ला, मीना और गुप्ता अनीता (2009), "वृद्धाश्रम में स्थित वृद्धों की सामाजिक स्थिति" चिंतन परंपरा, अंक- 11 जनवरी से जून 2009.
- दैनिक जागरण, दिनांक 15-01-2024, पेज नंबर- 07.
- दुबे, श्यामाचरण (2016), भारतीय समाज, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली।

- भारत सरकार (2011). भारत में वृद्धजन: जनगणना एवं सामाजिक-आर्थिक स्थिति. नई दिल्ली।
- बोस, ए. बी. (1982) "भारत में वृद्धावस्था: समस्याएं एवं संभावनाएं" टाटा मैकग्रा हिल नई दिल्ली।
- बंसल कुमार, मुकेश, ,बंसल आर. के. एवं , मनोज (2008). "वृद्धाश्रम के निवासियों को सहयोग की आवश्यकता." Indian Journal of Community Medicine, 33(2), पृ. 131.
- Singh U.K. Pattern of social adjustment and Interaction in Old Age (A Sociological Study Based on the Retired Employees), Unpublished Ph.D. Thesis Department of Sociology B.H.U. Varanasi, 1999, 246 -248.
- S. Ara. "Old-age home & the profile of their residents" Indian J. Med Res. 1997 Oct.
- United Nations (2002). Madrid International Plan of Action on Ageing, 2002. New York.
- हेल्पएज इंडिया (2009). भारत में वृद्धों के साथ दुर्व्यवहार: 2009. नई दिल्ली ।